# 10

# सूर्य सूक्त

प्रिय शिक्षार्थी पूर्व पाठ में आपने भगवद्गीता के 17वें अध्याय को पढ़ा जिसमें अपने श्रद्धा के तीन विभाग तथा तीन प्रकार के दान के विषय में जाना। इस पाठ में दिये गये मंत्र सूर्य से संबंधित है। सूर्य को वेदों में भगवान के रूप में बताया गया है। सूर्य की सम्पूर्ण जगत् की आत्मा हैं, सूर्य कई प्रकार से हमारा उपकार करता है।

## उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- ऋग्वेद के सूर्य सूक्त का उच्चारण कर पाने में; और
- सूर्य सूक्त का भावार्थ बता पाने में ।

## 10.1 सूर्य सूक्त

चि॒त्रं दे॒वाना॒मुद॑गा॒दनी॑कं॒ चक्षु॑र्मि॒त्रस्य॒ वरु॑णस्या॒ग्नेः ।

आप्रा॒ द्यावा॑पृथि॒वी अ॒न्तरि॑क्षं॒ सूर्य॑ आ॒त्मा जग॑तस्त॒स्थुष॑श्च ॥ १.११५.०१

citraṁ devānām ud agād anīkaṁ cakṣur mitrasya

varuṇasyāgneḥ |

āprā dyāvāpṛthivī antarikṣaṁ sūrya ātmā jagatas

tasthuṣaś ca||

रश्मियों का प्रकाशमान समूह सूर्यमण्डल के रूप में उदीत हो रहा है। ये मित्र, वरूण, अग्नि और संपूर्ण जगत् के ज्योतिर्मय नेत्र हैं। इनके उदित होने से भूलोक, पृथ्वी लोक तथा अंतरिक्ष लोक इनके तेज से सर्वत्र परिपूर्ण हो गये हैं। इस मण्डल में जो सूर्य है वह अन्तर्यामी होने से परमात्मा है तथा इस जङ्गम और संसार की आत्मा रूप है।

सूर्यो॑ दे॒वीमु॒षसं॒ रोच॑मानां॒ मर्यो॒ न योषा॑म॒भ्ये॑ति प॒श्चात् ।

यत्रा॒ नरो॑ देव॒यन्तो॑ यु॒गानि॑ वितन्व॒ते प्रति॑ भ॒द्राय॑ भ॒द्रम् ॥ १.११५.०२

sūryo devīm uṣasaṁ rocamānām maryo na yoṣām abhy eti

paścāt |

yatrā naro devayanto yugāni vitanvate prati bhadrāya

bhadram ||

सर्य गुणवती एवं प्रकाशवान उषा के पीछे–पीछे इस तरह चलता है जैसे कोई मनुष्य सर्वाङ्ग् सुन्दरी युवती का अनुगमन करता है। जब उषा प्रकट होती है तब मनुष्य सूर्य देव (प्रकाश के देवता) की पूजा करने के लिए अपने कर्तव्य कर्म को पूर्ण करते है। सूर्य कल्याण रूप है और उसकी पूजा करने से कल्याण की प्रप्ति होती है।

भद्रा अश्वा हरितः सूर्यस्य चित्रा एतग्वा अनुमाद्यासः ।
नमस्यन्तो दिव आ पृष्ठमस्थुः परि द्यावापृथिवी यन्ति सद्यः॥ १.११५.०३

bhadrā aśvā haritaḥ sūryasya citrā etagvā anumādyāsaḥ |
namasyanto diva ā pṛṣṭham asthuḥ pari dyāvāpṛthivī yanti sadyaḥ ||

सूर्य का यह रश्मि मण्डल (आभामण्डल) जो अश्व के समान उन्हे सभी जगह पहुँचाता है, चित्र–विचित्र और कल्याण रूप है। यह प्रत्येक दिन अपने ही पथ पर चलता है, जो पूजनीय है। यह सबको नमन की प्रेरणा प्रदान करता है। यह धु लोक के ऊपर निवास करता है। यह अपनी गति से (शीध्र) धुलोक को पृथ्वी लोक का परिमन्त्रण कर लेता है।

तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततं सं जभार ।
यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै ॥ १.११५.०४

tat sūryasya devatvaṁ tan mahitvam madhyā kartor vitataṁ

saṁ jabhāra |

yaded ayukta haritaḥ sadhasthād ād rātrī vāsas tanute

simasmai ||

सूर्य का यह देवत्व है और महत्त्व है कि वे आरम्भित कार्य जो पूर्ण नही हुआ है, को छोड़कर अस्ताचल जाते समय अपनी रश्मियों को इन लोक से अपने मे समेट लेते हैं और तत्काल ही उन रश्मियों और घोडों को एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर नियुक्त कर देते हैं। उस समय रात्रि अंधकार के आवरण मे सबको ढक लेती हैं।

तन्मि॒त्रस्य॒ वरु॑णस्याभि॒चक्षे॒ सूर्यो॑ रू॒पं कृ॑णुते॒ द्योरु॒पस्थे॑ ।

अ॒न॒न्तम॒न्यद्रुश॑दस्य॒ पाजः॑ कृ॒ष्णम॒न्यद्धरि॑तः॒ सं भ॑रन्ति ॥ १.११५.०५

tan mitrasya varuṇasyābhicakṣe sūryo rūpaṁ kṛṇute dyor

upasthe |

anantam anyad ruśad asya pājaḥ kṛṣṇam anyad dharitaḥ sam

bharanti ||

सूर्य प्रातः काल (अलसभोर) में मित्र, वरूण और सम्पूर्ण जगत् (सृष्टि) को सामने से प्रकाशमान करने के लिए प्राची के आकाशीय क्षितिज में अपना प्रकाशयम रूप लेकर प्रकट होते हैं। इनकी रशिमयों के प्रबल

रात्रिकालीन अंधकार के निवारण में समर्थ विलक्षण वेग की सृष्टि होती है।

अ॒द्या दे॑वा॒ उदि॑ता॒ सूर्य॑स्य॒ निरंह॑सः पिपृ॒ता निर॑व॒द्यात् ।
तन्नो॑ मि॒त्रो वरु॑णो मामहन्ता॒मदि॑ति॒ः सिन्धु॑ः पृथि॒वी उ॒त द्यौः॥ १.११५.०६

adyā devā uditā sūryasya nir aṁhasaḥ piprtā nir avadyāt |
tan no mitro varuṇo māmahantām aditiḥ sindhuḥ pṛthivī uta dyauḥ ||

हे सूर्य की प्रकाशमान रशिमयों! आज सूर्योदय के समय यहाँ वहाँ बिखर कर तुम हमें पापों से बाहर निकाल कर बचा लो। केवल पापों से ही नहीं बल्कि जो निन्द्रित कार्य है। दुःख है, दरिद्रय है, उनसे सबसे हमारी रक्षा कर कल्याण करों। जो हम कह रहे, मित्र, वरूण, अदिति, सिन्धु, पृथ्वी और धुलोक के देवता उसको माने, स्वीकार करें और हमारी रक्षा करें।

## पाठगत प्रश्न– 10.1

(1). रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. चित्रं देवानामुदगादनीकं ................ वरुणस्याग्नेः ।
2. भद्रा अश्वा हरितः ............ चित्रा एतग्वा अनुमाद्यासः ।
3. तत्सूर्यस्य ............ तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततं सं जभार ।
4. अद्या देवा उदिता सूर्यस्य ............ पिपृता निरवद्यात् ।
5. तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः .......... पृथिवी उत द्यौः ॥

## आपने क्या सीखा?

- सूर्य सूक्त का भावार्थ।
- भगावान सूर्य देव की विशेषताएं।

## पाठांत प्रश्न

1. सूर्य सूक्त का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

## उत्तरमाला

10.1

(1)

1. चक्षु॑र्मि॒त्रस्य॒
2. सूर्य॑स्य
3. दे॒व॒त्वं
4. निरं॑हसः
5. सिन्धु॑ः